



■ अवतूबर में वृद्धि दर सूक्ष्म पड़कर 0.4 प्रतिशत पर आई, आईआईटी में वृद्धि दर 13 माह के निचले स्तर पर-12



■ सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान वर्तक संपत्ति विवरण पर समय सीमा बढ़ाने से सुप्रीम इन्फ्राएट-12



■ एस जयशंकर बोले- जैविक हाथियां: चुनौती से निपटने को खाका तैयार करने की जल्दत-13



कोच ने की तारीफ कहा- फिटनेस और फॉर्म बदलकर विराट के भवित्व को लेकर सवाल ही नहीं उठा-14

6th वार्षिकोत्सव
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

मार्गशीर्ष शुक्र पक्ष द्वादशी 03:57 उपरांत त्रयोदशी विक्रम संवत् 2082

अमृत विचार

हल्द्वानी |

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार



www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

■ लखनऊ ■ बड़ेली ■ कानपुर
■ मुरादाबाद ■ अयोध्या ■ हल्द्वानी

मंगलवार, 2 दिसंबर 2025, वर्ष 5, अंक 282, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

संसद ड्रामा करने की जगह नहीं: मोदी

शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले प्रधानमंत्री बोले-विपक्ष इसे हताशा निकालने का मंच बना रहा

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विपक्ष पर कड़ा हमला बोलते हुए कहा कि संसद ड्रामा करने की जगह नहीं है, यह काम करने की जगह है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विपक्ष संसद को चुनावी हार के बाद हताशा निकालने का मंच बना रहा है। संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले संसद परिषद में प्रधानमंत्री ने कहा कि सत्र को राजनीतिक ड्रामा का रूपांतरण नहीं बनाना चाहिए, बल्कि यह रूपांतरण और परिवर्तनमुख्य बहस का मंच होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि विपक्ष चाहे हो तो वह उसे राजनीति में संकरणकरता लाने के कुछ सुझाव देने को तैयार है। मोदी ने संसद की कार्यवाही वाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा, हमें जिम्मेदारी की भावना से काम करने की जरूरत है। पिछले सत्रों के दौरान संसदीय निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, कि नारों पर। विहार में मतदाता सूची के एसआईआर का विरोध कर रहे विपक्षी सदस्यों के हांगामे के कारण संसद के नाम सुनवाई देते हुए कहा कि वह एसआईआर पर वर्चों के समय के लिए शर्त नहीं रखे।

शानदार जीत से उत्साहित मोदी ने विपक्षी दलों पर कठाक करते हुए कहा, यहां तक कि आप देश भर में ऐसे कर सकते हैं। आपने वहां बोला है जहां आप हार गए हैं। आप वहां भी बोल सकते हैं जहां आपको हार का सामना करना चाही है। लेकिन संसद में, ध्यान नीति पर होना चाहिए, न निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, कि नारों पर। विहार में मतदाता सूची के एसआईआर का विरोध कर रहे विपक्षी सदस्यों के हांगामे के कारण संसद के मानसून सत्र में दोनों सदनों की कार्यवाही वाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, कि नारों पर। विहार में मतदाता सूची के एसआईआर का विरोध कर रहे विपक्षी सदस्यों के हांगामे के कारण संसद के मानसून सत्र में दोनों सदनों की कार्यवाही वाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 10 वर्षों से विपक्ष जो खेल खेल रहा है, वह इसे करते हैं। संसद



संसद सत्र की कार्यवाही के पहले दिन गृहीत प्रधानमंत्री मोदी, रवास्य मंत्री जयपी नड्डा व संसदीय कार्यवाही मंत्री किरण रीजीजू। ● एजेंसी

■ सरकार एसआईआर पर वर्चों के खिलाफ नहीं: रीजीजू

नई दिल्ली। संसदीय कार्यवाही मंत्री किरण रीजीजू ने राजसभा में जोर दिया कि सरकार मतदाता सूची के एसआईआर पर वर्चों सुधारे पर चर्चा के खिलाफ नहीं है, लेकिन उसे जवाब देने के लिए कुछ समय दिया जाए। एसी के जवाब से असंतुष्ट विपक्ष ने सदन से विरोधित किया। रीजीजू ने उच्च सदन में वर्चों द्वारा विपक्ष पर एसआईआर पर तकाल वर्चों की मांग कर रहा था। उन्होंने कहा कि सरकार एसआईआर पर वर्चों की विपक्ष की मांग पर विवार कर रहा है और इस मांग को खालिज नहीं किया गया है। विपक्ष की एस मुद्दे पर तकाल वर्चों की विपक्ष कराए जाने की मांग पर कहा कि वह एसआईआर पर वर्चों के समय के लिए शर्त नहीं रखे।

विपक्ष का हांगामा

पहले दिन लोकसभा में एसआईआर और कुछ अन्य मुद्दों को लेकर विपक्षी दलों के सदस्यों के हांगामे के कारण सदन की

बैठक दो बाद स्थगन के बाद दिनभर के पल मौन रखकर उड़े श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद स्थगित कर दी गई। हांगामे के बीच ही लोकसभा ने 'मणिरू माल और सेवा किंकट' और महिला कबड्डी विवरकम में भारत की जीत पर खिलाड़ियों को बधाई दी। इसके बाद जैसे ही उन्होंने प्रश्नकाल शुरू करने का निर्देश दिया, कांग्रेस, सपा समेत विपक्षी दलों के सदस्य एसआईआर 'वर्चों' पर विवार कर रहे। सुबह 11 बजे सदन की बैठक राष्ट्रगांग की धून वर्चों के साथ शुरू हुई। इससे पहले लोकसभा के सभापति तौर पर पर वर्चों के सदस्यों के एवं विपक्ष की जानकारी दी जिसके बाद कुछ

लोग अंदर बैठे हैं वो काटते हैं, कुते रहने काटते हैं। उनका कहा है कि वह आवारा जननर को उठाकर पूछ चिकित्सक के पास ले जा रही थी। उन्होंने यह भी दावा किया कि सरकार को जननर पर दंड नहीं हैं और उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि आवारा कुते को बगाने के खिलाफ कोई कानून नहीं है।

पराली जलाने को दोष नहीं देसकते वायु प्रदूषण के कई अन्य कारक

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के मुद्दे पर सुनवाई को केवल सर्वियों के महिलाओं में 'रससी' नाम सुनवाई के तौर पर नहीं देखा जा सकता है, और इस समस्या के अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान खोजने के लिए महिलाओं में दो बार सुनवाई की जाएंगी। प्रधान न्यायाधीश सर्वकांत और न्यायमूर्ति जॉयमलाया वागची की पीठ ने सामान्य विवरण में एक अहम बदलाव करते हुए कहा, पराली जलाने का मुद्दा अनावश्यक रूप से राजनीतिक मुद्दा या अहम का मुद्दा नहीं बनाना चाहिए।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने दिल्ली- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण के लिए पराली जलाने को सुधारने के मुद्दे करार भी देखा जाएगा। एसी के अधिकारियों ने एनसीआर के अनुरूप सर्वियों के द्वारा विपक्षीय विवरण के लिए एक अधिकारी को नियुक्त किया गया। एसी अदालत ने हरियाणा के एक बुजुर्ग दंपती की मांग पर रखा रहा है।



रहा है? प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति वागची की पीठ ने पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना सरित गैर-राजसभा सांसदों से कहा कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में डिजिटल अरेस्टर के लिए एक अनुमति दें। एसी अदालत ने हरियाणा के एक बुजुर्ग दंपती की मांग पर रखा रहा है।

जिनको इस न्यायालय में बहुत कम प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसके ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

निवास हरियाणा के दिसर में स्थित

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग, केंद्रीय

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अन्य के

विविध कार्यालयों के द्वारा विपक्षीय विवरणों के लिए एक अधिकारी को नियुक्त किया गया। एसी अदालत ने हरियाणा के एक बुजुर्ग दंपती की पीठ ने पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना सरित गैर-राजसभा सांसदों से कहा कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में डिजिटल अरेस्टर के लिए एक अनुमति दें। एसी अदालत ने हरियाणा के एक बुजुर्ग दंपती की मांग पर रखा रहा है।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि इसी के ताकि वायु प्रदूषण के खिलाफ नहीं देखा जाएगा।

सिटी ब्रीफ

सब्जी लेने निकला युवक

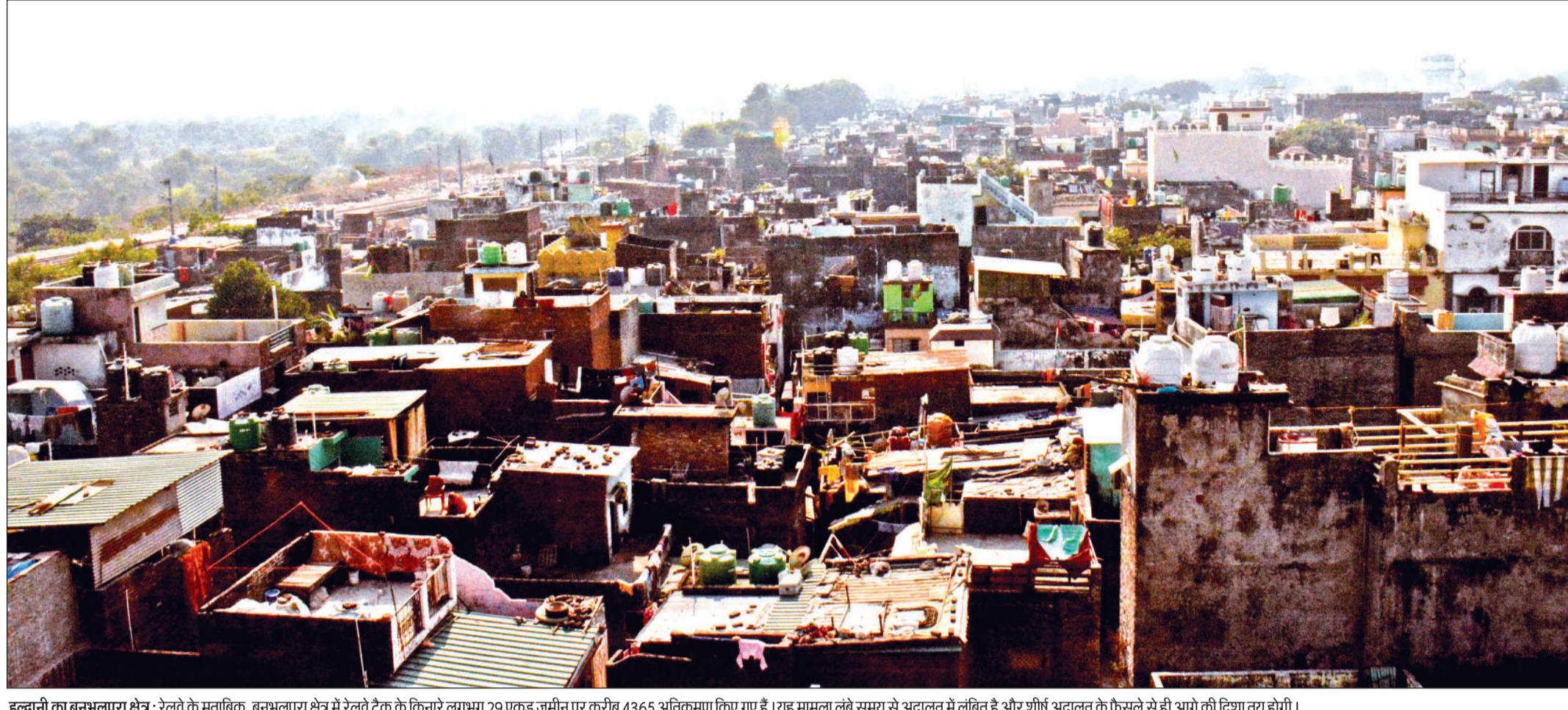
नहर में गिरकर मरा

हल्द्वानी: घर से सब्जी लेने निकले दो पर्यावाहन चारों युवक की नहर में गिर कर मौत हो गई। पुलिस दर्दना के कारणों की जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक, यांगी हल्द्वानी निवासी 21 वर्षीय सुनील कुमार पंडा पुत्र भवन पंडा यहां परेवार के साथ रहता था। शनिवार की शाम करीब 6 बजे वह अपने दो पर्यावाहन से सब्जी खरीदने निकला था। हमतपुर घौमाल वैरीप्डाव पहुंचने पर वह संदिध परिस्थितियों में सड़क किनारे से गुजरी नहर में गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गया। आनन-फानन में युवक को एसटीएव पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। आशका है कि वाहन पिलाने की वजह से यह हादसा हुआ।

मोबाइल और जेवर से भरी स्कूटी चोरी

हल्द्वानी: एपएससी की परीक्षा देने गए युवक की स्कूटी चोरी हो गई। स्कूटी में कई मोटो फोन और जेवर थे। काठगोदाम पुलिस ने मामों में मुकदमा दर्ज कर दिया है।

कठविया रामड़ी जयुवा मुखानी निवासी आयुष रिह ने पुलिस को बताया कि वीरी 13 नवंबर को वह अपने दोस्त के साथ सीएचएसएस एसएससी की परीक्षा देने के बाद परिवहन रूप से घायल हो गया। परीक्षा देने से पहले आयुष ने अपनी स्कूटी को खाली की थी और जब परीक्षा देकर लौटे तो स्कूटी चोरी हो चुकी थी। आयुष के मुताबिक, स्कूटी की डिगरी में एफेन समृद्ध महोगी मोबाइल, चांदी की बेन, एप्स और स्मार्टफोन रखी थी। शान्तिक्षण विमल मिश्र ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर स्कूटी वोर की ताकत के लिए आयुष को अपील किया गया।



हल्द्वानी का बनभूलपुरा क्षेत्र: रेलवे के मुताबिक, बनभूलपुरा क्षेत्र में रेलवे ट्रैक के किनारे लगभग 29 एकड़ जमीन पर करीब 4365 अतिक्रमण किए गए हैं। यह मामला लंबे समय से अदालत में लिया गया है और शीर्ष अदालत के फैसले से ही आगे की दिशा तय होगी।

चाकचौबंद सुरक्षा, बनभूलपुरा हिंसा के 21 आरोपी गिरफ्तार

माहौल न बिगड़े इसलिए हल्द्वानी पुलिस ने की ताबड़तोड़ कार्रवाई, गिरफ्तार किए गए आरोपियों को आज कोर्ट के समक्ष किया जाएगा पेश

कार्यालय संचाददाता, हल्द्वानी

121 लोगों को तामील कराया गया पुलिस द्वारा नोटिस

107 आरोपियों के खिलाफ दायर की गई थी चार्जशीट

08 फरवरी 2024 को हुआ था बनभूलपुरा इलाके में दंगा

04 हजार से ज्यादा घर हैं अतिक्रमण की जद में



प्रस्तावित सुप्रीम फैसले के मद्देनजर बनभूलपुरा क्षेत्र में सोमवार को फूट मार्च करते पुलिस और पीएसी के अधिकारी और जवान। ● अमृत विचार

को वंचक बना लिया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को ढाका नहीं दिया। जब वर्षाकारी नहीं दिया तो वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया। इसके अंदर वर्षाकारी को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर्ज कराया गया और वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया। अब वर्षाकारी अतिक्रमण को अवैध घोषित कर दिया गया।

दर



ज्ञान वह हथियार है जो हारने वाले को विजेता बनाता है। एक व्यक्ति की जीवन भर कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए।

- चाणक्य, राजनीतिज्ञ

चाहिए समग्र समाधान

उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम की समय-सीमा को निर्वाचन आयोग द्वारा एक स्पात्राह बढ़ा दिया जाना केवल प्रशासनिक औपचारिकता नहीं, बल्कि उस दबाव की स्वीकारेकित भी है, जो इस अत्यंत विस्तृत प्रक्रिया पर शुरू से ही साफ दिख रहा था। मतदाता सूची पुनरीक्षण अपने आप में एक विशाल अधियान है। हर घर जा कर सत्यापन, नए मतदाताओं का पंजीकरण, मृत अथवा स्थानांतरित मतदाताओं का विलोपन और त्रुटियों का सुधार, जिसके लिए समय और संसाधनों की पर्याप्त अवश्यकता होती है। ऐसे में समय वृद्धि का यह निर्णय पूरे अधियान की गति, विश्वसनीयता और प्राप्तरित वाले डालने पाला है। निर्वाचन आयोग की यह स्वीकारेकित की गति, समय-सीमा और सुधारों की रूपरूपी दूरा पर कार्यक्रमों, वीएलओं और अधिकारियों के लिए भारी समस्या पैदा कर रही थी, अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह बात समझना कठिन नहीं कि उत्तर प्रदेश जैसा जनसंख्या और भौगोलिक विस्तार वाला राज्य किसी भी राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए एक अलग कार्ययोजना और अपेक्षाकृत अधिक समय की मांग करता है। ऐसे में प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि आयोग को यह पूर्वानुमान पहले क्यों नहीं था? क्या यह अद्वृद्धिता नहीं कही जाएगी कि इतनी बड़ी प्रक्रिया को शुरू से ही सीमित समय में वंधा गया और फिर दबाव बढ़ने पर पुनर्संस्थान की ज़रूरत पड़ गई? समय वृद्धि का सबसे बड़ा लाभ निःसंदेह वीएलओं और आम मतदाताओं की मिलेगा। वीएलओं पर वर्षों से काम का अविरक्त बोझ, अपर्याप्त प्रशिक्षण तथा जटिल एसआईआर रिपोर्टिंग की बाध्यता लगातार मानसिक और शारीरिक तनाव बढ़ाती ही है। मुरादाबाद में एक बीएलओं की दुखदूख मूल्य और विषय के इस आपेक्षा भी दबाव के चलते 20 वीएलओं अब तक अत्यन्हत्या कर चुके हैं, एक गंभीर चेतावनी है। इस स्थिति में निर्वाचन आयोग को केवल खंडन या औपचारिक बयान भर नहीं, बल्कि जर्मीनी स्तर पर कठोर सुधारात्मक कार्यवाई करनी चाहिए। कार्यभार का संतुलित बंटवारा, तर्क संगत डेलाइन, सुरक्षित कार्य-परिस्थितियां तथा मनोजैशनिक सहायता जैसे कदम अत्यंत आवश्यक हैं।

आज भी मतदाता सूची में संस्थान अथवा नए मतदाता के रूप में पंजीकरण करना, कागजी पॉर्ट हो या ऑनलाइन प्रक्रिया- आम लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण है। देश में आधार, पैन, पासपोर्ट और बैंकिंग जैसी सेवाओं का व्यापक डिजिटलीकरण हो चुकने के बाद निर्वाचन आयोग अगर इन नियमक मंस्थाओं के डाटा का प्रामाणिक उत्तरोग करएक सरल, एकीकृत सत्यापन प्रणाली विकसित करता, तो मतदाता पंजीकरण न केवल सहज होता, बल्कि पुनरीक्षण भी अधिक कुशल और लगभग ट्रॉफीहीत बन सकती थी। फिलहाल केवल एक समानांतर की समयवृद्धि से यह उम्मीद है कि यह प्रक्रिया पूरी तरह सटीक और त्रुटीहीत हो जाएगी, व्यावहारिक नहीं। इससे इतना भर होगा कि कार्यक्रमों पर तात्कालिक दबाव घटेगा और कुछ हृद तक गुणवत्ता में सुधार संभव है। वीएलओं की आत्महत्या और अवश्यक है।

प्रसंगवर्ती

मौसम का पूर्वाकलन व नैतिकता का सवाल

इस बार बहुत ज्यादा सर्दी पड़ने वाली है, ऐसी खबरें मीडिया-सोशल मीडिया पर तैर रही हैं। गलत सूचनाओं से न सिफर लोगों का जीवन बल्कि इससे बाजार भी प्रभावित होता है। आने वाला मौसम कैसा होगा, इसकी सटीक विविधायांकी कर पाना इतना आसान नहीं है। ला-नीना फिननीमीना का विवर का प्रैडिक्शन चार्ट और इसके बाद का घटनाक्रम देखने से मालूम होता है कि इसमें वायिक्याकलन के बाद असली प्रभाव तीन-चौथाई या मिश्रित रहा है, जिसमें इलाका अथवा प्रभावित क्षेत्र दबल दबाव करता है। प्रैडिक्शन के बारे में बताने के लिए एथिकल गाइडलाइन का ध्यान रखना जरूरी है। इसके पश्चात प्रभावों पर किसी की नजर नहीं पड़ती।

इस बार भौषण शीत रहेगी या नहीं रहेगी, यह जो जनवरी महीना बताएगा, जिसमें अभी एक मौसी बाद का समय यह है। जो होगा वह 15 दिसंबर 2025 से 15 जनवरी 2026 के बीच मालूम हो जाएगा। हिमालय और इससे परे सुदूर उत्तर में रूस और चीन के इलाकों, दिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों और भारत के मैदानी इलाकों के मौसम संबंधी असली आंकड़े देखने के बाद भारत में ला-नीना के असर के प्रकट होने के बाद ही इस बारे में कुछ कहना उचित होगा।

अभी से कह देना कि इस बार बहुत सर्दी पड़ेगी, उचित नहीं है। इस बार की सर्दी की त्रूटी में काड़ेकी की ठड़ होने या असल में हाड़ कपाने वाली सर्दी पड़ने और नैनिंग मोर्ट लैटिट्युड इससे इसके असर के बारे में तीजा वेदर रिपोर्ट्स का इंजार करना नैतिकता का तकाजा है। मौसम के अल्पकालीन मिजाज के बारे में एक आकलन के बारे में कह देना काफी नहीं है, बल्कि वह एकदम से सत्य जैसा नहीं दिखना चाहिए। बास-मीडिया में सामान्य संभावना को बढ़ा-चढ़ा कर, अनंतरायुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए भय और रोमांच पैदा करना एक खबरनुमा टेक्स्ट को कथा-कहानी बना देता है। ब्लॉ-अप करने के खबरों की इकॉनोमिक और सोशल कॉर्स्ट बहुत होती है। एथिक्स का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

मौसम के बारे में विदेश से आई सूचनाओं को आधार बना कर वस्तुसंबंधी को जैस का तस भारतीय मीडिया में चूसा करना उचित नहीं है, बल्कि लोकतन एसपर्स और साइटिस्ट्स से जान लेना जरूरी होता है। खेद है कि ऐसी खबरों के बारे में भारत का मौसम विज्ञान विभाग कोई टिप्पणी डिफेमेशन से बचने के लिए नहीं करता। उनकी अपनी वेबसाइट पर भी विदेशी जानकारी चाहती रहती है, जिस पर उनकी कोई टिप्पणी नहीं होती।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, जिसे अनेक भारतीय चैनलों ने देता है कि ऊपर की खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी का खाता है, जिसके बारे में बताने के लिए नहीं करता।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी के बारे में बताने के लिए नहीं करता।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी के बारे में बताने के लिए नहीं करता।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी के बारे में बताने के लिए नहीं करता।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी के बारे में बताने के लिए नहीं करता।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी के बारे में बताने के लिए नहीं करता।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिसमें मथ्य और परिच्छिमी प्रशांत महासागर और तापानम और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेशी खबर में, 'रिवर्स गीयर' तरह गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथकी की सतह से ऊपर देखने वाले एक विशाल मैशीनरी के बारे में बताने के लिए नहीं करता।

अत्यन्त

परमसत्ता से जुड़ने की प्रक्रिया है

ଓଡ଼ିଆ ଲେଖଣି

अध्यात्म पथ स्वयं को समग्र रूप से जानने की, उस परमसत्ता से जुड़ने की तथा आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार की प्रक्रिया है। कितने ही लोग इस पथ पर चल पड़ते हैं। बड़े उत्साह के साथ शुरुआत करते हैं। फिर रास्ते में ही कुछ हिम्मत हार बैठते हैं। कुछ सांसारिक राग-रंग को ही सब कुछ मान बैठते हैं। कुछ संकीर्ण स्वार्थ-अहंकार के धंधे में उलझकर, जीवन के आदर्श से समझौता कर बैठते हैं। कुछ आलस्य-प्रमाद में भ्रमित होकर बहुमूल्य जीवन को यों ही बर्बाद कर देते हैं। इसमें प्रायः इस समझ का अभाव मुख्य कारक रहता है कि अध्यात्म चेतना के परिष्कार का विज्ञान है, जिसमें जन्म-जन्मांतरों से मलिन चित्त एवं भ्रमित मन के साथ वास्ता पड़ रहा होता है। अचेतन मन के महासागर को पार करते हुए चेतना के शिखर का आरोहण करना होता है। आगे बढ़ना होता है।

निःसंदेह मार्ग कठिन है। दुरुह है। पूर्व में कृत कर्मराशि जब पहाड़ जैसा चट्टानी अवरोध बनकर राह में खड़ी हो जाती है, तो साधक की आस्था डांवाडोल हो जाती है। सस्ती पूजा-पत्री, भोग-चद्गावे व चिह्न पूजा के सहारे धर्म-आध्यात्म के पथ पर बहुत कुछ बटोरने के फेर में चला पथिक मार्ग में ही धराशाई हो जाता है। यहां तक कि नास्तिक हो जाता है और भगवान तथा समर्थ गुरु तक को कोसने लगता है। जबकि धर्म-आध्यात्म पथ का अपना विधान है, विज्ञान है। इसकी थोड़ी सी भी समझ साधक को राजमार्ग से विचलित नहीं होने देती। वह पगड़ियों में नहीं उलझता। धर्म-आध्यात्म की शुरुआत धार्मिकता की प्राथमिक कक्षा से होती है, जिसमें पूजा-पाठ से लेकर कर्मकांड का सहारा लिया जाता है, लेकिन स्वाध्याय एवं आत्मचिन्तन के साथ साधक की समझ भी सूखम होती जाती है। आस्तिकता के भाव के जाग्रत के साथ, श्रद्धा-निष्ठा परिपक्व होती है। इसी तैयारी के बाद अध्यात्म की कक्षा में प्रवेश मिलता है।

आश्चर्य नहीं कि अध्यात्म पथ पर चलने वाले ऋषियों ने इसे हुरे की धार पर चलने के समान दुस्साध्य बताया है, लेकिन इस विकट पथ का वरण करने वाले मुमुक्षु पथिकों ने भी कब हार मानी है। मार्ग की दुरुहता को जानते हुए भी अंतस की पुकार के बल पर वे हर युग में इस पथ का संधान करते रहे हैं। किसी समर्थ के अवलंबन के साथ अपार धैर्य, अनंत श्रद्धा और अनवरत प्रयास के साथ अभीष्ट को सिद्ध करते रहे हैं। निःसंदेह समर्थगुरु (पूर्णगुरु) का अवलंबन कार्य को और सरल बना देता है। हमारा परम सौभाग्य है कि अवतारी गुरुसत्ता का सानिध्य हमें मिला। हमारे गुरुवर के सिद्धसूत्रों के साथ अध्यात्म का व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप हमारे लिए सहज सुलभ है, लेकिन इनको जीवन में वरण करने, धारण करने के लिए साहस, निष्ठा एवं तैयारी की न्यूनतम मांग है। आखिर हर मांग अपनी कीमत मांगता है, जो चीज जितनी कीमती होती है, उसका उतना ही मूल्य भी चुकाना होता है। एक किसान, व्यापारी व विद्यार्थी तन-मन व धन की सारी पूँजी झोक देता है। तब कहीं जाकर समस्त सुख-सुविधाओं को त्यागते हुए एकात्मिक प्रयास एवं निष्ठा के बल पर अभीष्ट मंजिल तक पहुंचता है। इसी प्रकार आध्यात्म पथ भी अपनी कीमत मांगता है, जिसमें चित्त-चेतना की शुद्धि एवं परिष्कार मुख्य है। स्वयं को गलाकर-मिटाकर सब कुछ पाने की कला अध्यात्म है। इसमें सबसे पहले चित्त का परिष्कार करना होता है। इसी के साथ जन्मों से अज्ञान के परदे में ढका आत्मज्ञान का सूर्य प्रकाशित होता है और अपने ईश्वरीय अस्तित्व का बोध कराता है। वैसे तो समर्थगुरु (पूर्णगुरु) एवं परमात्मा की कृपा तो सदा ही उनकी सभी संतानों पर अनवरत रूपों में बरसती रहती है। इसको ग्रहण करने व धारण करने की क्षमता का अभाव ही मुख्य कारण है कि अधिकांशतया जीवन इनसे रीता रह जाता है। जिस मात्रा में साधक-शिष्य इसको धारण कर पाता है, उसी अनुपात में उसका आत्मिक विकास होता है। अध्यात्म विज्ञान का कार्य अंततः जीवन का कायाकल्प है। मनुष्य में देवत्व का उदय है। यह उसकी अंतर्निहित दिव्य संभावनाओं व क्षमताओं का जागरण एवं विकास है।



आध्यात्मिक लेखक

પારાણિક કથા

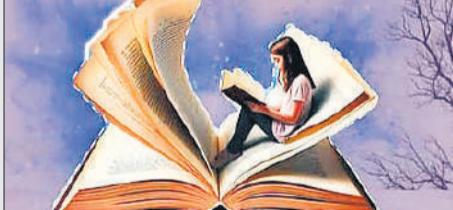
वृषभध्वज और गौमाता

- काव्य उत्कृ

ବୌଧକଥା

ज्ञानकक्षाका मोहताजनहीं

यह बात उसके लिए अत्यंत चिंता का विषय बन गई। उसे लगने लगा कि अब एक साल पीछे रह जाना तय है। उसका मन घबराहट और निराशा से भर गया। अंततः अपने मन का बोझ हल्का करने के लिए वह प्रख्यात विद्वान् और मार्गदर्शक मदन मोहन मालवीय जी के पास पहुंचा। विद्यार्थी ने कांपती आवाज में अपनी व्यथा रखी, “बाबूजी, मैं बीमारी के कारण परीक्षा में नहीं बैठ पाऊंगा। लगता है मुझे एक साल और उसी कक्षा में रहना पड़ेगा।” मालवीय जी बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनते रहे। फिर अत्यंत शांति से बोले, “एक बात बताओ बेटा, पढ़ना अच्छी चीज़ है या बुरी?” विद्यार्थी ने तुरंत उत्तर दिया, “अच्छी चीज़ है।” मालवीय जी मुस्कुराएँ और बोले, “तो फिर पढ़ने से डर कैसा? विद्यार्थी को दर्जे का, कक्षा का, साल का इन सबका विचार छोड़कर पूरे मन से सीखने पर ध्यान देना चाहिए। ये दर्जे तो मनुष्य ने अपने सुविधा के लिए बना दिए हैं, ज्ञान इन्हें नहीं मानता।” उनकी बात सुनकर भी विद्यार्थी का चेहरा उदास बना रहा। उसकी मायूसी देखकर मालवीय जी ने गहरी आवाज में समझाया, “मेरे विश्वास मानो, अस्मली पढ़ाई म्क्कल और कॉलेज

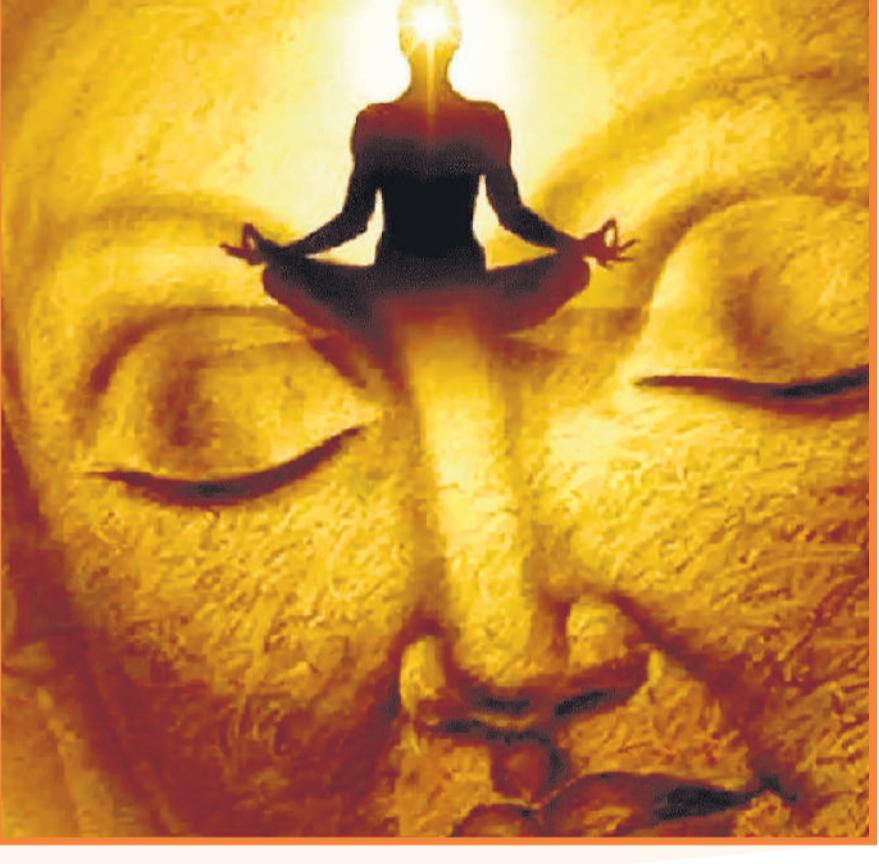


की चार दीवारों में सीमित नहीं रहती। जिन्हें सचमुच पढ़ना होता है, वे हर परिस्थिति में सीखते हैं। विद्या पाने के लिए तपस्या करनी पड़ती है और यह तपस्या जीवनभर चलती है। दुनिया के अनुभव, परिस्थितियां, कष्ट- यही सबसे बड़े गुरुकुल हैं, जिसे सीखने की आग होती है, उसके लिए साल पीछे रह जाना कोई बाधा नहीं।” वे आगे बोले, “जीवन में हमें बहुत-सी बातें किताबों से नहीं, बल्कि परिस्थितियों से सीखने को मिलती हैं। बीमारी, कठिनाइयां, संघर्ष-ये सब भी शिक्षक हैं। इसलिए यदि तुम सचमुच विद्वान बनना चाहते हो, तो दर्जे की चिंता छोड़कर ज्ञान का पथ पकड़े रहो।” मालीवीय जी के इन शब्दों ने विद्यार्थी के मन का बोझ हल्का कर दिया। उसे समझा आ गया कि पढ़ाई सिर्फ परीक्षा पास करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को सही दृष्टि देने वाली साधना है। वह नए उत्साह से भरकर वापस लौटा। सच यही है, जो सीखने वाला हृदय रखता है, उसके लिए हर दिन, हर अनुभव, हर संघर्ष एक नई पाठशाला बन जाता है। यही इस कथा का संदेश है।

आत्मकल्याण के साथ लोक-कल्याण

चित्त के प्रक्षालन के साथ इसका परिष्कार प्रारंभ होता है, जो स्वयं में समयसाध्य एवं कष्टसाध्य प्रक्रिया है। अपार धैर्य, अटूट श्रद्धा एवं निरंतर प्रयास के साथ यह कार्य संपन्न होता है। बार-बार असफलता के बाद भी साधक हिम्मत नहीं हारता और बार-बार प्रयास करता है। हजार असफलताओं के बाद हजार बार प्रयास करने का जीवट और हर हार के बाद पुनः उठकर आगे बढ़ने का अदम्य साहस अध्यात्म पथ को परिभाषित करता है। अध्यात्म पथ पर अभीष्ट को उपलब्ध सभी साधकों के जीवन दृष्टिंत इसी सत्य की गवाही देते हैं। परमपूज्य गुरुदेव ने इसके निमित्त आत्मनिरीक्षण, आत्मसमीक्षा, आत्मसुधार व आत्मनिर्माण की प्रक्रिया का प्रतिपादन किया है। दैनिक जीवन में आत्मबोध से लेकर तत्त्वबोध की व्यावहारिक साधना को बताया है, जिसमें संयम, स्वाध्याय और सेवा के साथ उपासना, साधना, आराधना की त्रिवेणी में अवगाहन करना पड़ता है। परमपूज्य गुरुदेव का यह मार्गदर्शन साधक को अपनी स्थिति के अनुरूप सीखने को प्रेरित करता है और देर-सवेर आध्यात्म पथ पर चलते हुए आत्मकल्याण के साथ लोक-कल्याण के महान उद्देश्य को पूर्ण करता है। गुरुदेव व दैवी कृपा साथ रहते हुए भी साधक को एकाकी ही इस पथ को पार करना होता है। अपनी

युरोप ये दोनों वृन्दावनों साथ हुए ना साथ बना ये इन दोनों हाल इस नये बाहर करना हालता है। जो का अंतरात्मा की पुकार पर आध्यात्म पथ पर आरूढ़ साधक इस मार्ग का सहर्ष वरण भी करता है। इसके लिए पथ के काटों की चिंता नहीं करनी। लोग क्या कहते हैं और क्या करते हैं, इसकी चिंता कौन करे? गुरुकृपा से अपनी आत्मा ही मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त है। लोग अंधेरे में भटकते हैं। भटकते रहें। हम अपने विवेक के प्रकाश का अवलंबन कर स्वतः ही आगे बढ़ेंगे। कौन विरोध करता है, कौन समर्थन इसकी गणना क्या करनी हमें? अपनी अंतरात्मा, अपना साहस अपने साथ है और हम वही करेंगे, जो करना अपने जैसे सजग साधकों के लिए उचित और उपयुक्त है।



संस्कारः आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध

संस्कार अपनी प्रकृति के अनुसार पर्वतभव वर्तमान जीवन विकास का आधार है। यह मानव जीवन के सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं शैक्षिक मूल्यों को एक दिशा प्रदान करता है, जिसके आधार पर व्यक्ति दैहिक एवं भौतिक विकास के साथ ही सुव्यवस्थित एवं सुसंस्कृत जीवनयापन करता है। संस्कारों का विधान अलौकिक पृष्ठभूमि में किया गया है तथा इनकी उत्पत्ति में मानवीय प्रवृत्तियों का विशेष येगदान माना गया है, जिनका आधार आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध है।



३०८ | कुमार

काइ सशय नहीं रह जाता है कि आज भी संस्कार पहल की भाँति धार्मिक एवं सामाजिक धरातल पर अपना अस्तित्व बनाए हुए है। व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण शुभ तथा अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है। इनमें से कुछ संस्कार तो जातक अपने पूर्वभव के साथ लाता है तथा कुछ को वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के तशीभत होकर अपना प्रदानकर जीवन के विकास के क्रम को महत्व प्रदान करते हैं। मनुष्य को इस बात का बोध हो जाता है कि जीवन की घटनाएं मात्र शारीरिक कियाओं का नाम नहीं अपितु एक चिरंतन प्रवाह है जिनमें सामाजिक संतोत्ता है। आध्यात्मिक उत्कृष्टि है तथा संस्कृतिका



व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण शुभ तथा अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है। इनमें से कुछ संस्कार तो जातक अपने पूर्वभव के साथ लाता है तथा कुछ को वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के वशीभूत होकर प्राप्त करता है एवं कुछ संस्कार जाती प्राप्ति के बाद

अवसर एवं जीवन का महत्व एवं पावंत्रता प्रदान करते हैं। संस्कार कदाचित् जीवन की घटनाओं के प्रति मनुष्य के भीतर व्याप्त उदासीनता को कम करने की प्रेरणा प्रदान कर जीवन के विकास के क्रम को महत्व प्रदान करते हैं। मनुष्य को इस बात का बोध हो जाता है कि जीवन की घटनाएं मात्र शारीरिक क्रियाओं का नाम नहीं अपितु एक चिरंतन प्रवाह है जिनमें सामाजिक संनेतन है आध्यात्मिक उत्कर्ष है तथा सांस्कृतिक है।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निपटी ↓
बंद हुआ	85,641.90	26,175.75
गिरावट	64.77	27.20
प्रतिशत में	0.08	0.10

	सोना 1,33,200
	प्रति 10 ग्राम

	चांदी 1,77,000
	प्रति किलो

अमृत विचार

हल्दानी, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

बरेली मंडी

आईआईपी में वृद्धि दर 13 माह के निचले स्तर पर

अवटूबर में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि सुस्थित पड़कर 0.4% पर आई

• एनएसओ के अनुसार, आईआईपी में वृद्धि दर सालाना आधार पर घटी



किया है।

आंकड़ों के मुताबिक, अवटूबर में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 1.8% पर आ गई, जबकि साल भर पहले यह 4.4% रही थी। आलोच्य महीने में खनन क्षेत्र के उत्पादन में 1.8% की गिरावट आई, जबकि गत वर्ष 2024 में यह 0.9% रही थी। विनिर्माण क्षेत्र में शामिल 23 में से नौ औद्योगिक खंडों ने अवटूबर में सालाना आधार पर सकारात्मक वृद्धि पहले की समान अवधि में औद्योगिक उत्पादन के वृद्धि दर स्तर सिंचन, जिनमें 3.7% बढ़ा था। आईआईपी का विचला निचला स्तर सिंचन, जिनमें 1.8% की वृद्धि दर की गई जबकि विचला उत्पादन में भी 0.9% की गिरावट दर्ज की गई। टिकाऊ 2025 के आंकड़ों का संशोधन करते

महीनों (अप्रैल-अक्टूबर) में देश के

विनिर्माण क्षेत्र में कुल 2.7% की वृद्धि दर की गई जबकि पिछले साल को समान अवधि में यह 4% थी। विनिर्माण क्षेत्र में शामिल 23 में से नौ औद्योगिक खंडों ने अवटूबर में महीने में खनन क्षेत्र के उत्पादन में 1.8% की गिरावट आई, जबकि गत वर्ष 2024 में यह 0.9% रही था। इस दौरान विचला उत्पादन में भी 0.9% की गिरावट दर्ज की गई जबकि विचला उत्पादन में 2.4% की वृद्धि हुई। जबकि एक साल पहले यह 2.9% थी। टिकाऊ उपचोक्ता खंड में आलोच्य माह के दौरान 0.5% की गिरावट आई, जबकि पिछले साल की समान अवधि में 4.7% बढ़ाती रही थी। अवटूबर, 2025 में गैर-टिकाऊ उपचोक्ता खंड में उत्पादन 4.4% गिर गया जबकि एक साल पहले इसमें 2.8% की वृद्धि हुई थी। दूंचगत क्षेत्र/निर्माण उत्पादन खंड में इसमें 0.9% की वृद्धि हो गई। जबकि एक साल पहले इसमें 4.8% की वृद्धि हुई थी।

विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां नौ माह के निचले स्तर पर

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। देश की विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां नवंबर में नौ महीने के एवं उत्पादन खंडों में घूमी वृद्धि दर सामने आई।

मासिक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई।

मौसमी रूप से समाजीय जीवन और व्यापार के बारे में विनिर्माण खंडों प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अवटूबर के 59.2 से नवंबर में 56.6 पर आ गया।

यह फरवरी के बाद से परिचालन स्थितियों में यहां सीधे गति का संकेत देता है। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) 50 से नौ वर्षों का अंक संकुचन दर्शाता है।

एक वर्षावधी के मुख्य भारत अंथशास्त्र प्रायः भूमध्य भूमि ने कहा कि नवंबर के पीएमआई आंकड़े इस बात की पूछताह करते हैं कि अमेरिकी शुल्क के कारण

विनिर्माण वितरण धीमी हुआ है।

इसमें कहा गया कि कंपनियों ने हालांकि सुझाव दिया कि अंतर्राष्ट्रीय विक्री की रुक्णान अनुबूल बना हुआ है जो अप्रीका,

पेशेंश, यूरोप और पश्चिम एशिया में हांगकॉन को अधिक विक्री की दर्शाता है।

कोयला विनिर्माण की आवश्यकता नहीं है।

मंत्रालय ने कोयला एवं लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

इस कदम का मकसद कारोबार सुमाता को बढ़ावा और कुशल एवं

टिकाऊ अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

नई प्रक्रिया में अब 2022 में इस दूसरे

विलेगी एवं गठित सरकारी समिति से मंजूरी

की आवश्यकता नहीं है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

इस कदम का मकसद कारोबार सुमाता को बढ़ावा और कुशल एवं

टिकाऊ अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

नई प्रक्रिया में अब 2022 में इस दूसरे

विलेगी एवं गठित सरकारी समिति से मंजूरी

की आवश्यकता नहीं है।

कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट (जीआर) के अनुमोदन के लिए त्रिन

मंत्रालय ने पहले की कार्यप्रणाली की समीक्षा की है।

क्यूंकि एनएसओ इनएलीटी

द्वारा मान्यता प्राप्त एवं अन्य एपीए द्वारा

सम्पर्क समीक्षा की प्राप्त अन्वेषण

एवं लिम्नाइट संसाधनों का तो तेज़

मजबूत अन्वेषण में विनियोग

मजबूत अन्वेषण के लिए कोयला

एवं लिम्नाइट ब्लॉक के लिए अन्वेषण

में अपने अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

देश की बढ़ी

जल्दी

द्वारा आवश्यकता आवश्यकता आवश्यकता

में अपने अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

देश की बढ़ी

जल्दी

द्वारा आवश्यकता आवश्यकता आवश्यकता

में अपने अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

देश की बढ़ी

जल्दी

द्वारा आवश्यकता आवश्यकता आवश्यकता

में अपने अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

देश की बढ़ी

जल्दी

द्वारा आवश्यकता आवश्यकता आवश्यकता

में अपने अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है।

देश की बढ़ी

जल्दी

द्वारा आवश्यकता आवश्यकता आवश्यकता

में अपने अन्वेषण को बढ़ावा देना है।

मंत्रालय ने कोयला, कोयला एवं

लिम्न

